भारत सरकार

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय

पशुपालन और डेयरी विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या- 2491

दिनांक 10 दिसंबर, 2024 के लिए प्रश्न

गधा, भेड़ और बकरी के दूध का उत्पादन

2491. श्री परषोत्तमभाई रुपालाः

क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

गधा, भेड़ और बकरी के दूध उत्पादन को बढ़ावा देने के साथ-साथ इन दुधारू पशुओं की संख्या में वृद्धि करने के लिए सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से कार्यान्वित किए गए उपायों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री

(श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह)

पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एनएलएम) योजना को क्रियान्वित कर रहा है, जिसका उद्देश्य प्रति पशु उत्पादकता में वृद्धि करना, गधे, भेड़ और बकरी के दूध का उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ इन पशुओं की संख्या में वृद्धि करना है। इस योजना को 21 फरवरी 2024 को संशोधित किया गया था जिसमें गधे के नस्ल-उन्नयन को शामिल किया गया था।

इस योजना के तहत विभाग, व्यक्ति, किसान उत्पादक संगठनों, किसान सहकारी समितियों, संयुक्त देयता समूहों, स्वयं सहायता समूहों, धारा 8 कंपनियों को उद्यमिता विकास के लिए प्रोत्साहन प्रदान करके अन्य गैर बोवाइन पशुओं के अलावा भेड़, बकरी और गधे में नस्ल सुधार के लिए राज्यों में उद्यमियों को सहायता दे रहा है। विभाग, राष्ट्रीय पशुधन मिशन योजना के तहत भेड़, बकरी और गधे के आनुवंशिक सुधार के लिए राज्यों को निधियां भी प्रदान कर रहा है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन योजना का उद्देश्य भेड़, बकरी, गधे से संबंधित अनुसंधान और विकास करने वाले संस्थानों, विश्वविद्यालयों, संगठनों को प्रोत्साहित करना भी है। पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत विभाग भेड़, बकरी और गधे में पशु रोगों की रोकथाम के लिए टीकाकरण और डिवार्मिंग के लिए निधियां उपलब्ध कराकर राज्यों की सहायता करता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर सीआईआरजी) ने वर्ष 2024 में जमुनापारी बकरी नस्ल के लिए सतत आनुवंशिक सुधार और संरक्षण परियोजना के संबंध में उत्तर प्रदेश के राज्य पशुपालन विभाग के साथ सहयोग स्थापित किया है। उत्तर प्रदेश सरकार के पशुपालन विभाग ने वर्ष 2024-25 से वर्ष 2028-29 की अवधि के लिए लगभग 33 करोड़ रुपए अनुमोदित किए हैं। आईसीएआर सीआईआरजी ने बकरी पालकों को वैज्ञानिक तरीके से

बकरी पालन का प्रशिक्षण देने के लिए उत्तर प्रदेश के राज्य पशुपालन विभाग के साथ समझौता ज्ञापन भी तैयार किया है, ताकि प्रदर्शन और आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। अखिल भारतीय बकरी समन्वित अनुसंधान परियोजना के ये केंद्र 19 राज्यों में चल रहे हैं, जिनका उद्देश्य संरक्षण, आनुवंशिक सुधार और मांस तथा दूध उत्पादन में वृद्धि करना है। उत्तर प्रदेश के मथुरा में बकरी संबंधी एक किसान उत्पादक संगठन कार्य कर रहा है।

भेड़ के दूध के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविक नगर ने संस्थान में पाटनवाड़ी भेड़ का रेवड़ स्थापित किया है और चयनात्मक प्रजनन के माध्यम से पाटनवाड़ी भेड़ों के डेयरी भेड़ के रूप में आनुवंशिक सुधार के लिए अनुसंधान कर रहा है। मानव उपभोग के लिए भेड़ के दूध की उपलब्धता बढ़ाने के लिए, दूध पीने वाले मेमनों के लिए दूध प्रतिस्थापन (मिल्क रिप्लेसर)(मामनाप्राश) जैसी तकनीक विकसित की गई।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र (आईसीएआर-एनआरसीई), हिसार गधा पालन में उद्यमिता विकास के लिए हितधारकों को प्रशिक्षण दे रहा है और गधे के दूध के मूल्य संवर्धन और गधे के दूध से उत्पाद विकसित करने पर अनुसंधान कर रहा है। आईसीएआर - एनआरसीइ हलारी गधों के संरक्षण के लिए पशु आनुवंशिक संसाधनों संबंधी एक नेटवर्क परियोजना चला रहा है। इसके अलावा, किसानों की आय को बढ़ाने के लिए एक प्रसिजन गधा पालन मॉडल स्थापित करने और गधे के दूध के चिकित्सीय एवं कॉस्मेटिक महत्व के विस्तार संबंधी एक परियोजना भी आईसीएआर-एनआरसीई में चलाई जा रही है।

*****